3

अभ्यास अलंकार

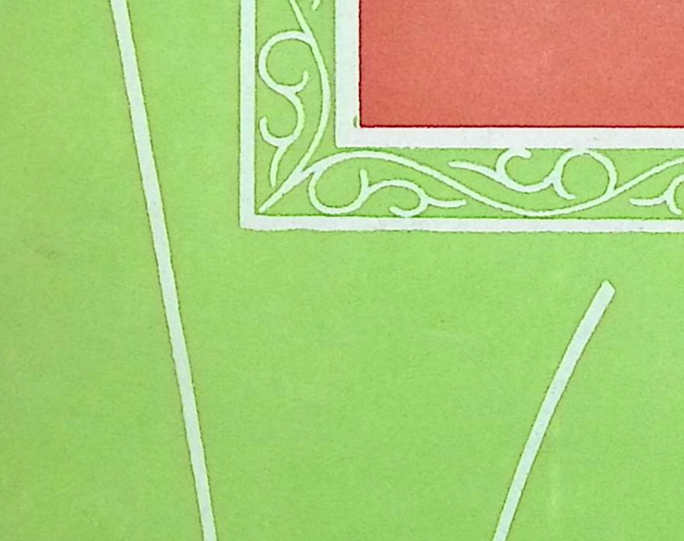

अभ्यास अलंकार

संस्कृत अभ्यास-पुस्तिका

तृतीयः भागः

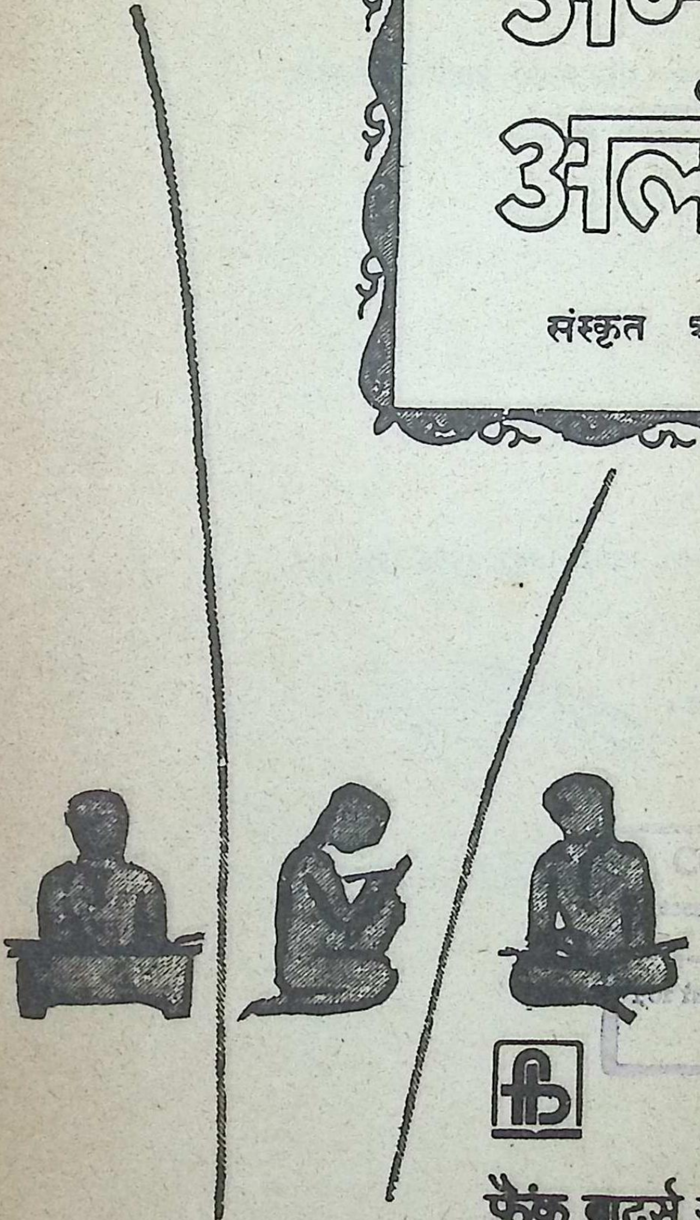

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya ★ Bharatiya Vidya
670
NOT FOR

फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी दिल्ली-६

प्रकाशक:
फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी (पब्लिशर्स) प्राइवेट लिमिटेड
4675-ए, अंसारी रोड़, नई दिल्ली-110002
दूरभाष: 263393, 279936

IV/85, चाँदनी चौक, दिल्ली 110006
दूरभाष: 276791, 268884

प्रथम संस्करण 1971,
संशोधित संस्करण 1974,
द्वितीय संस्करण 1978
पुनर्मुद्रण 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986

© **सर्वाधिकार सुरक्षित।**

Bhawan's Sri Sankarachar... 670 Mahavidyalaya ... Bharatiya Vid...

मूल्य: 7.00 रुपये

मुद्रक : अशोका आफसेट वर्क्स, दिल्ली

दो शब्द

प्रस्तुत अभ्यास-अलंकार पुस्तिका की रचना केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पाठ्यक्रम (Syllabus) पर आधारित है ।

यद्यपि संस्कृत एक दुरूह और कठिन विषय माना जाता है तथा बाल-वृन्द इसको पढ़ने में अधिक रुचि नहीं दिखाते, फिर भी यह एक समृद्ध और अमर भाषा बनी हुई है। ऐसी अमर भाषा जिसको कुछ लोग मृत भाषा कहने लगे हैं, उसको फिर से लोक व बाल-प्रिय बनाने का भी मुख्य उद्देश्य इस पुस्तक में निहित है ।

संस्कृत के कठिन व्याकरण को बड़ी कुशलता से सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस व्याकरण को सरल से कठिनता की ओर बड़े मनोरंजक ढंग से ले जाया गया है। कहीं पर भी बाल-वृन्द विषय से उकतायेगा नहीं बल्कि रुचि से अध्ययन करेगा । संस्कृत-व्याकरण के मुख्य भाग क्रमशः इन पुस्तिकाओं में विभाजित कर दिये गये हैं, जिससे बाल-बालिकायें सरलता से इस भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि मेरा नवीन प्रयास बाल-वृन्द के लिए लाभकारी होगा ।

—लेखक

विभक्ति के अर्थ

		एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्रथमा	Nom.	ने	(दो) ने	(सब) ने
द्वितीया	Acc.	को	(दो) को	(सब) को
तृतीया	Inst.	से, के द्वारा.	(दो) से, के द्वारा	(सब) से, के द्वारा
चतुर्थी	Dat.	के लिए	(दो) के लिए	(सब) के लिए
पञ्चमी	Abl.	से	(दो) से	(सब) से
षष्ठी	Gen.	का, की, के	(दो) का, की, के	(सब) का, की, के
सप्तमी	Loc.	में, पर	(दो) में, पर	(सब) में, पर
सम्बोधन	Voc.	हे, अरे	(दो) हे, अरे	(सब) हे, अरे

सन्धि

(Joining of Letters)

दो या इससे अधिक वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

स्वर सन्धि – इसमें स्वर की स्वर से सन्धि होती है। स्वर सन्धि के मुख्य भेद ये हैं :—

(i) दीर्घ सन्धि :—	हिम + आलयः = हिमालयः
	चमू + ऊर्मिः = चमूर्मिः
(ii) गुण सन्धि :—	सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः
	चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः
(iii) वृद्धि सन्धि :—	सदा + एव = सदैव
	वन + औषधिः = वनौषधिः
(iv) अयादि सन्धि :—	ने + अनम् = नयनम्
(v) यण् सन्धि :—	यदि + अपि = यद्यपि
	मनु + अन्तर = मन्वन्तर

वर्तमान काल

(Present Tense)

नम् धातु :—

लट् लकार

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
उत्तम पुरुष 1st Person	नमामि	नमावः	नमामः
मध्यम पुरुष 2nd Person	नमसि	नमथः	नमथ
अन्य पुरुष 3rd Person	नमति	नमतः	नमन्ति

अभ्यास

इसी प्रकार कथ् (कथय्), वद्, भू (भव) के रूप लिखिये (Conjugate कथ्, वद्, भू like नम्) :—

कथ् धातु

उत्तम पुरुष	कथयामि	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

वद् धातु

उत्तम पुरुष	वदामि	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

भू धातु

उत्तम पुरुष	भवामि	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

भूतकाल
(Past Tense)

कथ् धातु के रूप :—

लङ् लकार

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
उ० पु० 1st Person	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम
म० पु० 2nd Person	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
अ० पु० 3rd Person	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्

अभ्यास

इसी प्रकार नम्, वद्, भू (भव्) के रूप लिखिये (Conjugate नम्, वद्, भू like कथ्) :—

नम् धातु

उत्तम पुरुष	अनमम्	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

वद् धातु

उत्तम पुरुष	अवदम्	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

भू धातु

उत्तम पुरुष	अभवम्	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

भविष्यत् काल
(Future Tense)

भू धातु के रूप :—

लृट लकार

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
उ० पु० 1st Person	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
म० पु० 2nd Person	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
अ० पु० 3rd Person	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

अभ्यास

इसी प्रकार कथ्, नम्, वद् धातु के रूप लिखिये (Conjugate कथ्, नम् and वद् like भू) :—

कथ् धातु

उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

नम् धातु

उत्तम पुरुष	नंस्यामि	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य पुरुष	....	....	....

वद् धातु

उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
अन्य-पुरुष	....	....	....

अभ्यास

बताओ मैं कौन हूँ ? रिक्त स्थानों पर लिखिये (What am I ?) :

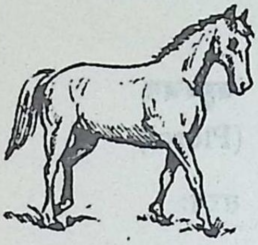

अहम् मण्डूकः अस्मि।
अहम् अश्वः अस्मि। ....
अहम् सर्पः अस्मि।

अहम् मयूरः अस्मि।
अहम् काकः अस्मि। ....
अहम् उलूकः अस्मि।

अहम् वानरः अस्मि।
अहम् बालः अस्मि। ....
अहम् बालिका अस्मि।

अहम् पुस्तकं पठामि।
अहम् भोजनं करोमि। ....
अहम् पत्रं लिखामि।

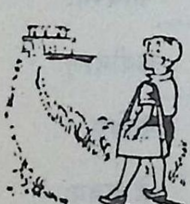

अहम् उपवनं गच्छामि।
अहम् विद्यालयं गच्छामि। ....
अहम् गृहं गच्छामि।

पुँल्लिङ्ग वाचक

पुँल्लिङ्ग में उकारान्त 'तरु' शब्द के रूप (Masculine Noun ending in उ are declined as follows) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्रथमा Nom.	तरुः	तरू	तरवः
द्वितीया Acc.	तरुम्	तरू	तरून्
तृतीया Inst.	तरुणा	तरुभ्याम्	तरुभिः
चतुर्थी Dat.	तरवे	तरुभ्याम्	तरुभ्यः
पञ्चमी Abl.	तरोः	तरुभ्याम्	तरुभ्यः
षष्ठी Gen.	तरोः	तर्वोः	तरूणाम्
सप्तमी Loc.	तरौ	तर्वोः	तरुषु
सम्बोधन Voc.	तरो !	तरू !	तरवः !

पुँल्लिङ्ग में इकारान्त 'कवि' शब्द के रूप (Feminine Noun ending in इ are declined as follows) :—

प्रथमा Nom.	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया Acc.	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया Inst.	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी Dat.	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी Abl.	करे	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी Gen.	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी Loc.	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन Voc.	हे कवे !	हे कवी !	हे कवयः !

अभ्यास

दयालु, मुनि शब्दों के पुंलिङ्ग में रूप लिखिए (Decline fully दयालु, मुनि in Masculine) :—

दयालु शब्द के रूप

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

मुनि शब्द के रूप

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिये (Change the following sentences into Plural) :—

१. स्वर्णस्य मृगः न भवति । ....

२. वीरः रणक्षेत्रे युद्धं करोति । ....

३. उपवने सः न क्रीडति । ....

४. आश्रमे मुनिः तपः करोति । ....

५. मूर्खः वानरः कुत्र कूर्दति ? ....

६. पर्वते शीतलः समीरः वहति । ....

७. सः नदीं न गमिष्यति । ....

८. रामः स्वर्णस्य मृगम् अपश्यत् । ....

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को भविष्यत् काल में बदलिये (Change the following sentences into Future Tense) :—

१. सः कदा गृहम् अगच्छत् ? ....

२. अहम् पार्वतीपरमेश्वरौ नमामि । ....

३. ते सर्वे वृथा वदन्ति । ....

४. त्वं किम् करोषि । ....

५. सः सदा असत्यं वदति । ....

६. अहम् भोजनं न करोमि ....

७. यूयम् किम न गच्छथ ? ....

८. वयम् विद्यालये पाठं पठामः । ....

अभ्यास

निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये (Conjugate the following):—

धातु (Verbal Root)	पुरुष (Person)	लकार (Tense)	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
वद्	उ० पु०	लट् लकार	....	....	....
नम्	अ० पु०	लङ् लकार	....	....	....
कथ्	म० पु०	लृट् लकार	....	....	....
भू	उ० पु०	लट् लकार	....	....	....
गम्	अ० पु०	लङ् लकार	....	....	....
पठ्	उ० पु०	लृट् लकार	....	....	....
चल्	म० पु०	लङ् लकार	....	....	....
पूज्	म० पु०	लृट् लकार	....	....	....
धाव्	अ० पु०	लङ् लकार	....	....	....
क्रीड्	उ० पु०	लट् लकार	....	....	....
खाद्	अ० पु०	लङ् लकार	....	....	....
चुर्	उ० पु०	लृट् लकार	....	....	....
गण्	म० पु०	लङ् लकार	....	....	....
नृत्	म० पु०	लट् लकार	....	....	....
नश	उ० पु०	लट् लकार	....	....	....
बुध्	अ० पु०	लृट् लकार	....	....	....
नम्	म० पु०	लङ् लकार	....	....	....
स्था	अ० पु०	लट् लकार	....	....	....

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों की सहायता से अपने वाक्य बनाइये (Make your own sentences with the help of the words given) :—

रामेण, जलं, नमामि, सुरेशः, गच्छावः ।

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिये (Change the following sentences into Plural Number) :—

१. सः रामेण सह क्रीडति । ....

२. अहम् दुग्धं पिबामि । ....

३. सा अद्य ग्रामं गच्छति । ....

४. त्वम् किं पठसि ? ....

५. सः पत्रं लिखति । ....

अभ्या

निम्नलिखित वाक्यों को एकवचन में बदलिये (Change the following sentences into Singular Number) :—

१. नीचाः कलहम् इच्छन्ति । ....

२. वयम् कन्दुकेन सह क्रीडामः । ....

३. ते विद्यालयं गच्छन्ति । ....

४. यूयम् निबन्धं लिखथ । ....

५. वयम् गृहं न गच्छामः । ....

अभ्यास

निम्नलिखित क्रियाओं को उचित स्थान पर लिखिए (Write each of the following Verbs in the appropriate places) :—

अगच्छत्, अपठत्, अक्रीडन्, अखादत्, अगच्छाम्, अपठः, अधावन्, अपश्यन् ।

१. रामः समाचार-पत्रम् ....

२. कृष्णः रमया सह उपवनम् ....

३. तत्र बिले मूषकाः ....

४. उपवने छात्राः ....

५. त्वम अपि पुस्तकम् ....

६. अन्धकारे सिंहः अश्वम् ....

७. वयम् ह्यः गृहम् ....

८. ते चलचित्रम् ....

अभ्यास

निम्नलिखित क्रियाओं का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए (Use the following in your own sentences) :—

अपश्यत्, अधावः, अक्रीडाम्, अनृत्यन्, अचलत् ।

....

....

....

....

....

इदम् शब्द के पुंल्लिङ्ग में रूप—

		एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्रथमा	Nom.	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	Acc.	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	Inst.	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	Dat.	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	Abl.	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	Gen.	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	Loc.	अस्मिन	अनयोः	एषु

इदम् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में रूप :—

प्रथमा	Nom.	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	Acc.	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	Inst.	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	Dat.	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	Abl.	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	Gen.	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	Loc.	अस्याम्:	अनयोः	आसु

इदम् शब्द के नपुंसकलिङ्ग में रूप—

इदम्	इमे	इमानि
इदम्	इमे	इमानि
अनेन	आभ्याम्	एभिः

नोट : शेष विभक्तियों में पुंल्लिङ्ग की तरह चलेंगे।

अभ्यास

किम् शब्द के पुंलिङ्ग में रूप लिखिए (Decline fully किम् in Masculine Gender) :—

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्रथमा Nom.	............का............	...........कौ...........	........के........
द्वितीया.......	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

किम् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में रूप लिखिए (Decline fully किम् in Feminine Gender) :—

....	........का...........	..........के..........	........का:........
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

सुभाषितानि

उपकारः परो धर्मः, परार्थं कर्म-नैपुणम् ।
पात्रे दानं परः कामः, परो मोक्षो वितृष्णता ॥
स्वगृहे पूज्यते मूर्खः, स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥
प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थ किं करिष्यति ॥

अभ्यास

उपर्युक्त श्लोकों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए (Explain the above श्लोकाः in your own language) :—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए (Correct the following sentences) :—

(i) अहम् विद्यालयं गच्छसि। ....

(ii) सः भोजनेन तुष्यसि। ....

(iii) अहम् असत्यं न कथायामि। ....

(iv) मयूराः वने नृत्यति। ....

(v) बालकाः पुस्तकं पठामि। ....

(vi) आवाम् गृहम् गच्छन्ति। ....

(vii) यूयम् भोजनं करोषि। ....

(viii) सः कलहं कुर्वन्ति। ....

अभ्यास

निम्नलिखित क्रियाओं की सहायता से अपने वाक्य बनाइए (Make your own sentences with the help of the Verbs given below):—

चोरयति, नृत्यन्ति, कथयसि, तुष्यसि, गणयामि, पुष्यामि।

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी या इंगलिश में अनुवाद कीजिए (Translate the following sentences into Hindi or English) :—

(i) वाराणस्यां कर्पूरपटको नाम रजकोऽवसत् ।

(ii) तस्य गृहे कुक्कुर-गर्दभौ आस्ताम् ।

(iii) रजकः कुक्कुराय अल्पान्नम् अयच्छत् ।

(iv) परन्तु सः गर्दभाय प्रभूतं यवसं प्रायच्छत् ।

(v) कदाचित् रात्रौ रजकस्य गृहे तस्करः प्राविशत् ।

(vi) तदा गर्दभः प्राङ्गणे बद्धः आसीत् कुक्कुरः च उपविष्टः आसीत् ।

(vii) तस्करं दृष्ट्वा गर्दभः कुक्कुरम् अकथयत् ।

(viii) कुक्कुर ! गृहे तस्करः प्रविशति, त्वं भषणेन स्वामिनं किं न जागरयसि ?

....

....

....

....

....

....

....

....

अव्यय

अव्यय वने बनाये शब्द होते हैं, इनमें कभी परिवर्तन नहीं होता है। कुछ प्रसिद्ध अव्यय शब्द, अर्थ सहित नीचे दिये जाते हैं :—

उपरि—ऊपर	अन्तः—मध्य में	यदा—जब
अधः—नीचे	पुनः—फिर	कदा—कब
शनः—धीरे	सहसा—अचानक	तदा—तब
कथम्—कैसे	ह्यः—कल (भूतकाल)	सदा—हमेशा
शीघ्रम्—जल्दी	श्वः—कल (भविष्यत्)	धिक्—धिक्कार
सह—साथ	दिवा—दिन	चिरम्—देर से
विना—बिना	यत्—कि	ईषत्—थोड़ा
इव—तरह	यतः—क्योंकि	तूष्णीम्—चुप
कुत्र—कहाँ	वृथा—व्यर्थ	अतः—इसलिए
तत्र—वहाँ	पुरः—सामने	च—और
यत्र—जहाँ	अलम्—बस	एव—ही
अत्र—यहाँ	अधुना—अब	खलु—निश्चय से
कदाचित्—कभी	इदानीम्—अब	यावत्—जब तक
अपि—भी	एकदा—एक बार	तावत्—तब तक
वरम्—अच्छा	इत्थम्—इस प्रकार	हा—शोक
इतस्ततः—इधर-इधर	न—नहीं	कच्चित्—आशा करने में
सुष्ठु—खूब	नूनम्—निश्चय से	

अभ्यास

(1) निम्नलिखित अव्ययों के अर्थ लिखो :—

अलम्, इतस्ततः, तूष्णीम्, इदानीम्, कच्चित्।

(2) निम्नलिखित अव्ययों को वाक्यों में प्रयुक्त करो :-

वरम् श्वः, उपरि. धिक इत्थम।

सुभाषितानि

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे ।
सज्जनाः न हि सर्वत्र, चन्दनम् न वने वने ।।
प्रदोषे दीपकः चन्द्रः, प्रभाते दीपकः रविः ।
त्रैलोक्ये दीपकः धर्मः, सुपुत्रः कुलदीपकः ।।

Vocabulary :—

शैलः—पर्वत (a mountain)
सज्जनः—भला आदमी (a good man)
चन्दनः—चन्दन (sandal wood)
प्रदोषः—रात या अँधेरा (night or dark)
चन्द्रः—चाँद (moon)

अभ्यास

उपरोक्त श्लोकों का भावार्थ लिखिए (Explain the adove verses) :—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

दधि शब्द के नपुंसकलिङ्ग में रूप लिखिए (Decline fully दधि in Neuter Gender) :–

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र० Nom.	दधि	दधिनी	दधीनी
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

नदी शब्द के स्त्रीलिङ्ग में रूप लिखिये (Decline fully नदी in Feminine Gender) :—

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

वारि शब्द के नपुंसकलिङ्ग में रूप लिखिए (Decline fully वारि in Neuter Gender) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र० Nom.	वारि	वारिणी	वारीणि
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

धेनु शब्द के रूप लिखिये (Decline धेनु fully) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	....	....	....
तृ०	....	....	....
च०	....	....	....
पं०	....	....	....
ष०	....	....	....
स०	....	....	....
सं०	....	....	....

अभ्यास

पितृ शब्द के रूप लिखिये (Decline पितृ fully) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	....	....	....
तृ०	....	....	....
च०	....	....	....
पं०	....	....	....
ष०	....	....	....
स०	....	....	....
सं०	....	....	....

अभ्यास

गो शब्द के रूप लिखिये (Decline गो fully) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	....	....	....
तृ०	....	....	....
च०	....	....	....
पं०	....	....	....
ष०	....	....	....
स०	....	....	....
सं०	....	....	....

अभ्यास

मातृ शब्द के रूप लिखिये (Decline मातृ fully) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	....	....	....
तृ०	....	....	....
च०	....	....	....
पं०	....	....	....
ष०	....	....	....
स०	....	....	....
सं०	....	....	....

लोट् लकार (Imperative)

पठ् धातु के रूप (Conjugation of पठ्)

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
उ० पु० 1st Person	पठानि	पठाव	पठाम
म० पु० 2nd Person	पठ	पठतम्	पठत
अ० पु० 3rd Person	पठतु	पठताम्	पठन्तु

अभ्यास

इसी प्रकार विश् तथा गम् धातु के रूप लिखिए (Conjugate विश् and गम् like पठ्) :—

विश् धातु

उ० पु०	विशानि	....	....
म० पु०	....	....	....
अ० पु०	....	....	....

गम् धातु

उ० पु०	गच्छानि	....	....
म० पु०	....	....	....
अ० पु०	....	....	....

अभ्यास

निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए (Conjugate the following) :—

नम् धातु

लोट् लकार

	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
उ० पु० 1st Person	नमानि	....	....
म० पु० 2nd Person	....	....	....
अ० पु० 3rd Person	....	....	....

कृ धातु

लृट् लकार

....	करिष्यामि	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

इष् धातु

लङ् लकार

....	ऐच्छत	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

कृदन्त

जिन धातुओं के बाद कृत् प्रत्यय लगते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं। कुछ मुख्य कृत् प्रत्यय नीचे दिये जाते हैं :—

शतृ-शानच्

शतृ और शानच् प्रत्यय 'रहा' या 'ता हुआ' अर्थ में आते हैं। शतृ का अत् और शानच् का आन या मान शेष रहता है।

जैसे :—

धातु	Hindi Meaning	शतृ	धातु	Hindi Meaning	शतृ	धातु	Hindi Meaning	शानच्
भू	होना	भवत्	कृ	करना	कुर्वत्	नी	ले जाना	नयमान
पत्	गिरना	पतत्	जी	जीतना	जयत्	कृ	करना	कुर्वाण
दृश्	देखना	पश्यत्	नी	ले जाना	नयत्	सेव्	सेवा करना	सेवमान
गम्	जाना	गच्छत्	स्मृ	याद करना	स्मरत्	शिक्ष्	सिखाना	शिक्षमाण
वद्	बोलना	वदत्	हृ	ले जाना	हरत्	कथ्	कहना	कथयमान
पठ्	पढ़ना	पठत्	दा	देना	ददत्	गण्	गिनना	गणयमान
पच्	पकाना	पचत्	चुर्	चुराना	चोरयत्	विद्	होना	विद्यमान
स्था	ठहरना	तिष्ठत्	वस्	रहना	वसत्	जन्	पैदा होना	जायमान
पा	पीना	पिबत्	इष्	चाहना	इच्छत्	सह्	सहना	सहमान
तुद्	तंग करना	तुदत्	दिव्	चमकना	दीव्यत्	वृत्	होना	वर्तमान
भी	डरना	विभ्यत्	हस्	हँसना	सत्	मृ	मरना	म्रियमाण
दा	देना	यच्छत्	क्षि	नष्ट करना	क्ष	वृध्	बढ़ना	वर्धमान
मुच्	छोड़ना	मुञ्चत्						

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों में से शतृ-प्रत्ययान्त शब्द चुनकर लिखिए (Write the शतृ ending words from the following sentences) :—

१. अहम् गच्छन्तं सर्पम् अपश्यम्। गच्छन्तं

२. सः भोजनं पचन्तम् सूदम् अवदत्। ....

३. खादन् रमेशः न गच्छति। ....

४. अहम् रमेशं क्रीडन्तम् पश्यामि। ....

५ ते हसन्तः न वदन्ति। ....

अभ्यास

निम्नलिखित का परिचय दीजिए (Recognize the following) :—

	Hindi Meaning	धातु	प्रत्यय		Hindi Meaning	धातु	प्रत्यय
सेवमान	सेवा करना	सेव	शानच्	पश्यत्	देखना	....	....
इच्छत्	चाहना	....	....	पठत्	पढ़ना	....	....
भवत्	होना	....	....	कुर्वाण	करना	....	....
तिष्ठत्	ठहरना	....	....	भाषमाण	बोलना	....	....
स्मरत्	याद करना	....	....	कथयत्	कहना	....	....
पिबत्	पीना	....	....	विद्यमान	होना	....	....
हरत्	ले जाना	....	....	वसत्	रहना	....	....
शोभमान	शोभा देना	....	....	इच्छत्	चाहना	....	....

अभ्यास

निम्नलिखित शतृ-शानच् प्रत्ययों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए (Use in your own sentences the following शतृ-शानच्) :—

वदत्, पिबत्, पचत्, चोरयत्, विद्यमान, कथयत्, वसत् ।

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित धातुओं के शतृ-शानच् प्रत्ययों में रूप लिखिए (Write the following verbs in शतृ-शानच्) :—

धातु	शतृ	धातु	शानच्
पत्	....	वन्द्	....
पच्	....	ईक्ष्	....
वद्	....	मृ	....
भू	....	कथ्	....
स्मृ	....	सेव्	....

अभ्यास

निम्नलिखित का परिचय दीजिए (Recognize the following) :—

मानवेन्द्रः	मानव+इन्द्रः	अ+इ=ए	गुण सन्धि
शशाङ्कः	....	....	....
गिरीशः	....	....	....
विद्यालयः	....	....	....
भानूदयः	....	....	....
भूऽर्वम्	....	....	....
रमेशः	....	....	....
गङ्गोदकम्	....	....	....
महर्षिः	....	....	....
प्रत्यक्षम्	....	....	....
अत्यानन्दः	....	....	....
मध्वरिः	....	....	....
हरये	....	....	....
भावुकः	....	....	....

अभ्यास

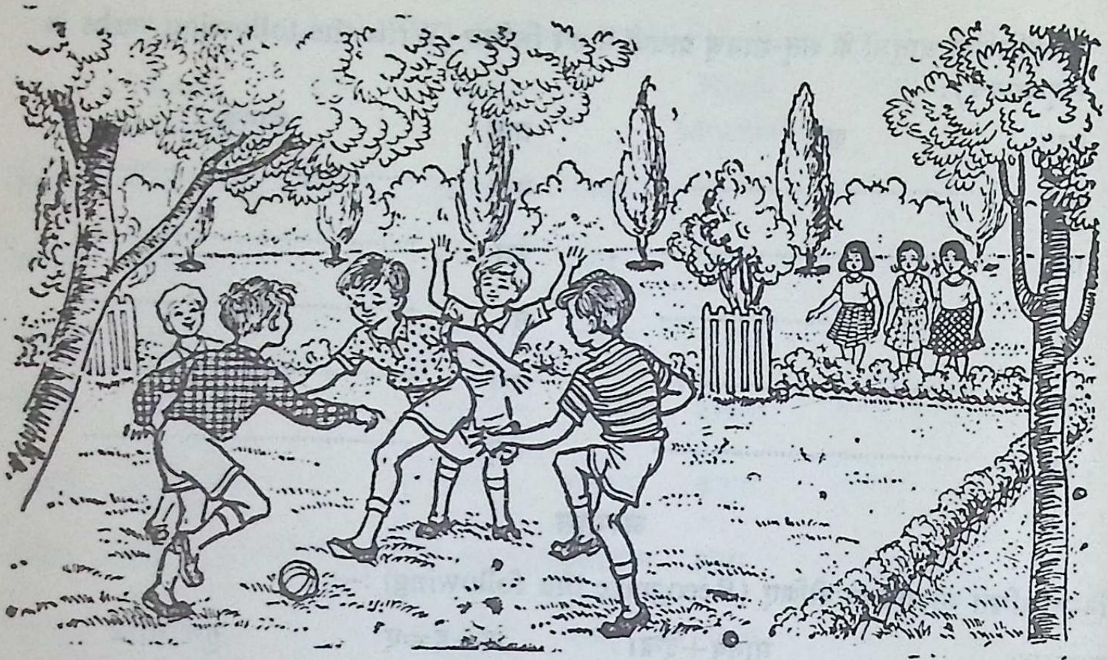

उपरोक्त चित्र की सहायता से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बाजिए (Give the answers of the following questions with the help of the above picture) :—

१. बालकाः कुत्र सन्ति ?

....

२. ते किं कुर्वन्ति ?

....

३. ते कथं क्रीडन्ति ?

....

४. किम् उपवने वृक्षाः सन्ति ?

....

५. बालिकाः किम् कुर्वन्ति ?

....

६. किम् ताः क्रीडाम् पश्यन्ति ?

....

अभ्यास

कोष्ठक में दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये (Write the required form of word given in the brackets) :—

१. वानरा:..................समाचारं रामम् अकथयन्। [सीता]

२. ....चरितं जनान् मार्गं दर्शयति। [राम]

३. आवाम् तम्..................करिष्याव:। [उपाय]

४. जवाहर: स्वतन्त्रस्य भारतस्य........प्रधान मन्त्री अभवत्। [प्रथम]

५. ....शासनं प्रजातन्त्रमस्ति। [भारत]

६. सुरेशस्य पिता प्रात:..........पाठयति। [तद्]

७. गर्दभस्य चीत्कारेण..........निद्रा अनश्यत्। [रजक]

८. श्री लाजपतराय: बहुवारं..........अगच्छत्। [कारागार]

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये (Use the following words in your own sentences) :—

संग्रहालय:, निर्माणम्, प्रयागे, अध्यापक:, पित्रे, हिमालय:।

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी या इंगलिश में अनुवाद कीजिये (Translate the following paragraphs into Hindi or English) :—

पुरा भारत देशः पराधीन आसीत्। अत्र वैदेशिकानां राज्यमासीत्। आंग्लाः जनाः भारतस्य शासकाः आसन्।

देशं स्वतन्त्रं कर्तुं जनाः प्रायतन्त। देशस्य सर्वेषु प्रदेशेषु नेतारः अभवन्। भारतस्य स्वतन्त्रतायै मुम्बय्यां श्री फिरोजशाह मेहता कांग्रेसस्य प्रसिद्धः नेता अभवत्। असौ भारतस्य जनतायाः विचारान् आंग्ल-शासकान् अकथयत्।

गुर्जर-देशस्य श्री मोहन दास कर्मचन्दो गांधिः जनतायै आन्दोलनं कर्तुं प्रेरणाम् अददात्। गांधि-महोदयस्य आन्दोलनैः वैदेशिकानां बलं शिथिलमभवत्।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए (Give the answers of the following questions) :—

१. वयं कुत्र वसामः ?

....

२. किम् अधुना अस्माकं देशः पराधीनः अस्ति ?

....

३. वैदेशिकानां राज्यं कदा आसीत् ?

....

४. मुम्बय्यां नेता कः आसीत् ?

....

५. फिरोजशाह मेहता आंग्लशासकान् किम् अकथयत् ?

....

६. गांधिमहोदयः किं प्रेरणाम् अददात् ?

....

७. वैदेशिकानां बलं कदा शिथिलम् अभवत् ?

....

अभ्यास

चित्र की सहायता से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (Give the answers of the following questions with the help of the picture) :—

१. अस्मिन चित्रे कोऽयं दृश्यते ?

....

२. पत्रवाहकस्य हस्तयोः किं दृश्यते ?

....

३. पत्रवाहकः प्रतिदिनं किं आनयति ?

....

४. पत्रवाहकः पत्राणि कुतः आनयति ?

....

५. किं त्वम् पत्रवाहकस्य प्रतीक्षां करोषि ?

....

NSSMV

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये (Translate the following sentences into Sanskrit): -

१. मैं आज कार्यालय नहीं जाऊँगा।	I will not go to office today.
२. वह अपना पाठ याद नहीं करता है।	He does not learn his lesson.
३ रमेश अपनी बहिन के साथ जाता है।	Ramesh goes with his sister.
४. क्या भारतवर्ष स्वतन्त्र देश है ?	Is India a free country ?
५. वह प्रातः दूध पीता है।	He takes milk every morning.
६. उमा अपने भाई को पढ़ाती है।	Uma teaches her brother.
७. मैंने तुम को एक पत्र लिखा।	I wrote a letter to you.
८. क्या उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था ?	Was he not in good health ?

....

....

....

....

....

....

....

....

पिता को पुत्र का पत्र

आदरणीयाः पितृ-चरणाः मुजफ्फरपुरतः

सादरं वन्दे ! दिनांक १२-३-७३

अत्र कुशलम्, आशासे तत्र भवन्तोऽपि कुशलिनः भविष्यन्ति। भवतः पत्रं प्राप्तम समाचारः विज्ञातश्च । अहं अधुना गृहं आगन्तुम् असमर्थोऽस्मि यतः परीक्षा मार्च मासस्य दशम दिनांकतः प्रारप्स्यते । अतः परीक्षानन्तरमेव अहं आगन्तुम् शक्नोमि। शेषकुशलं। मात्रे ज्येष्ठ-भ्रात्रे च प्रणामाः ।

भावुकः पुत्रः

नरेशः गुप्तः

अभ्यास

अपनी माता को एक पत्र लिखिये (Write a letter to your mother) :—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

आत्मन् शब्द के पुँल्लिङ्ग में रूप (Declension of आत्मन् in Masculine) :—

		एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र०	Nom.	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	Acc.	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृ०	Inst.	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतु०	Dat.	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पंच०	Abl.	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी०	Gen.	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्त०	Loc..	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बो०	Voc.	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

अभ्यास

इसी प्रकार अध्वन् (way) शब्द के रूप लिखिये (Decline fully अध्वन् like आत्मन्) :—

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

'लक्ष्मी' शब्द के स्त्रीलिङ्ग में रूप लिखिये (Decline fully लक्ष्मी in Feminine Gender) :—

....
....
....
....
....
....
....
....

अभ्यास

वार्ता' शब्द के स्त्रीलिङ्ग में रूप लिखिये (Decline fully वार्ता in Feminine Gender) :—

....
....
....
....
....
....
....
....

दीर्घ ईकारान्त 'श्री' शब्द के स्त्रीलिङ्ग में रूप (Declension of श्री in Feminine) :—

		एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्र०	Nom.	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वि०	Acc.	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृती०	Inst.	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतु०	Dat.	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पंच०	Abl.	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी०	Gen.	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रियाम्-श्रीणाम्
सप्त०	Loc.	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बो०	Voc.	हे श्रीः !	हे श्रियौ !	हे श्रियः !

अभ्यास

इसी प्रकार 'धी' शब्द के रूप लिखिये (Decline fully धी like श्री) :—

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

प्रकृतिभाव :—

जहाँ सन्धि नहीं होती—

(i) जहाँ द्विवचन पद के ई, ऊ, ए से परे कोई स्वर हो वहाँ सन्धि नहीं होती। जैसे :—

लते + इमे = लते इमे।

हरी + इमौ = हरी इमौ।

विष्णू + आगतौ = विष्णू आगतौ।

हरी + एतौ = हरी एतौ।

विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ।

(ii) अदस् शब्द के 'म' के साथ लगे हुए ई, ऊ की भी किसी से सन्धि नहीं होतो। जैसे :—

अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः। अमूः + आगताः = अमूः आगताः।

अमी + इषवः = अमी इषवः। अमू + आसाते = = अमू आसाते।

व्यञ्जन सन्धि :—

दो वर्णों, स्वर या व्यञ्जन में परस्पर मिलने से व्यञ्जनों में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

(i) यदि 'स' या तवर्ग का, 'श्' या चवर्ग से योग हो तो स् को श और तवर्ग क्रमशः चवर्ग हो जाता है। जैसे :—

सत् + चित् = सच्चित्। रामस् + शेते = रामश्शेते।

तत् + ज्वलति = तज्ज्वलति। रामस् + चलति = रामश्चलति।

(ii) इसी प्रकार स् या तवर्ग से ष् और ट्वर्ग का योग हो तो स् को ष् और तवर्ग को क्रमशः ट्वर्ग हो जाता है। जैसे :—

तत् + टीका = तट्टीका। धनुस् + टंकारः + धनुष्टंकारः।

उत् + डयनम् = उड्डयनम्। दुर्बलस् + षष्ठः = दुर्बलष्षष्ठः।

(iii) वर्गों के पहले अक्षर (क् च् ट् त् प्) से परे यदि कोई स्वर या वर्गों का तीसरा चौथा अक्षर या य् र् ल् व् हो तो पहले अक्षर के स्थान पर तीसरा (क्रमशः ग् ज् ड् द् ब्) हो जाता है, जैसे :—

वाक् + ईशः = वागीशः । भवत् + आज्ञा = भवदाज्ञा ।

महत् + धनुः = महद्धनुः । तत् + रागः = तद्रागः ।

तत् + वत् = तद्वत् । तद् + हन्ति = तद्धन्ति ।

(iv) वर्ग के चौथे वर्ण (घ् झ् ढ् ध् भ्) का यदि चौथे वर्ण से योग हो तो उसे अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण (ग् ज् ड् द् ब्) हो जाता है। जैसे :—

लभ् + धः = लब्धः । क्रुध् + धः = क्रुद्धः ।

अभ्यास

सन्धि कीजिए (Join the Sandhi) :—

सपद् + जयः = ... तद् + झरितम् = ...

महत् + छाया = ... सुप् + अन्तः = ...

जगत् + नायकः = ... जगत् = ईशः = ...

जगत् + नाथः = ... रामस् + चिमोति = ...

अमी + अश्वाः = ... विष्णू + इमौ = ...

हरिस् + शेते = ... तत् + टीका = ...

दृत + रागः = ...

अभ्यास

निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये (Conjugate the following) :—

स्था धातु :—

लृट् लकार

....	स्थास्यामि	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

नश् धातुः—

लङ् लकार

....	अनश्यम्	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

विद् धातु :—

लृट् लकार

....	वेदिष्यामि	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

दातृ शब्द के पुंल्लिङ्ग में रूप लिखिये (Decline fully दातृ in Masculine Gender) :—

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

अतिथि शब्द के पुंल्लिङ्ग में रूप लिखिये (Decline fully अतिथि in Masculine Gender) :—

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

अभ्यास

पितृ शब्द के पुंल्लिङ्ग में रूप लिखिए (Decline fully पितृ in Masculine Gender) :—

	एकवचन (Sing.)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Pl.)
प्र० Nom.	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

(i) क्त्वा (Indeclinable Past Participle) :—

क्त्वा का त्वा शेष रहता है। इसका अर्थ है कर या करके। अर्थात् यह प्रत्यय समान कर्ता वाली दो क्रियाओं से पहली क्रियाओं में लगती है। जैसे :—र भ: जलं पीत्वा उपाविशत्।

धातु	क्त्वा	धातु	क्त्वा	धातु	क्त्वा
भू	भूत्वा	कथ्	कथयित्वा	मुच्	मुक्त्वा
जि	जित्वा	चुर्	चोरयित्वा	हन्	हत्वा
नी	नीत्वा	तुल्	तोलयित्वा	कुप्	कुपित्वा
श्रु	श्रुत्वा	तड्	ताडयित्वा	जन्	जनित्वा
कृ	कृत्वा	भक्ष्	भक्षयित्वा	पठ्	पठित्वा
मृ	मृत्वा	सेव्	सेवित्वा	मन्	मत्वा

(ii) ल्यप्—यदि किसी धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगाया जाए. तो त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय लगता है। जैसे :—

दा+त्वा=दत्त्वा	आ+दा+ल्यप्=आदाय
नी+त्वा=नीत्वा	आ+नी+ल्यप्=आनीय
हस्+त्वा=हसित्वा	वि+हस्+ल्यप्=विहस्य

(iii) तुमुन् (To)

तुमुन् का तुम् शेष रहता है। इसका अर्थ 'के लिए है।

धातु	तुमुन्	धातु	तुमुन्	धातु	तुमुन्
भू	भवितुम्	कथ्	कथयितुम्	मुच्	मोक्तुम्
जि	जेतुम्	चुर्	चोरयितुम्	हृ	हर्तुम्
ना	नेतुम्	तुल्	तोलयितुम्	कुप्	कोपितुम्
श्रु	श्रोतुम	तड्	ताडयितुम्	जन्	जनितुम्
कृ	कर्तुम्	भक्ष्	भक्षयितुम्	पठ्	पठितुम्
मृ	मर्तुम	सेव्	सेवितुम्	मन्	मन्तुम्

अभ्यास

निम्नलिखित क्त्वा, तुमुन् प्रत्ययान्त शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए (Use the following in your own sentences) :–

पीत्वा, गन्तुम्, नीत्वा, गत्वा, श्रोतुम्, पठितुम्, दत्वा, द्रष्टुम् ।

....

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

निम्नलिखित धातुओं के क्त्वा, तुमुन् प्रत्ययों में रूप लिखिये (Write the following in क्त्वा, तुमुन्) :—

धातु	क्त्वा	धातु	तुमुन्
गम्	गत्वा	गम्	गन्तुम्
नम्	....	पठ्	....
भू	....	भू	....
नी	....	दृश्	....
पच्	....	दा	....
पठ्	....	क्रीड्	....
दृश्	....	चल्	....
स्मृ	....	श्रु	....

अभ्यास

निम्नलिखित का परिचय दीजिए (Recognize the following) :—

	धातु	प्रत्यय	अर्थ
पिबन्	पा	शतृ	पीता हुआ
पश्यन्	....	....	....
चिन्तयमानः	....	....	....
पठितुम्	....	....	....
नीत्वा	....	....	....
भूत्वा	....	....	....
कुर्वाणः	....	....	....
कुर्वन्	....	....	....
चलितुम्	....	....	....
पठित्वा	....	....	....
विद्यमानः	....	....	....
तिष्ठन्	....	....	....
खादित्वा	....	....	....
नेतुम्	....	....	....
द्रष्टुम्	....	....	....
दत्वा	....	....	....
याचमानः	....	....	....

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए (Translate the following sentences into Sanskrit) :—

१. वह बम्बई से वापस आ गया।	He came back from Bombay.
२. राम ने पुस्तकें नहीं चुराईं।	Ram did not steal the books.
३. राम का भाई मद्रास में रहता है।	Ram's brother lives in Madras.
४. मैं प्रश्न लिखने के लिए कापी लाता हूँ।	I bring an exercise book to write a question.
५. मैं उद्यान की शोभा देखने के लिए वहाँ गया।	I went there to see the beauty of the garden.
६. मैं विद्यालय जाकर अध्ययन करूँगा।	Having gone to the school I will study.
७. धोबी कपड़े नहीं धोवेगा।	The washerman will not wash the clothes.
८. आकाश में सूर्य क्यों चमकता है ?	Why the sun shines in the sky ?

....

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

क्त प्रत्यय :—

गम्+त=गत
हन्+त=हत
नी+त=नीत
पा+त=पीत
हृ+त=हृत
धृ+त=धृत
दृश्+त=दृष्ट

क्त प्रत्यय का वाक्यों में प्रयोग :—

रावणः रामेण हतः।
मया पुस्तकम् पठितम्।
तेन दुग्धम् पीतम्।
सीता रावणेन हृता।

निम्नलिखित का परिचय दीजिए (Recognize the following) :—

रूप	शब्द	विभक्ति	वचन	लिङ्ग
देवात्	देव	पञ्चमी	एकवचन	पुंल्लिङ्ग
कवये	....	....	....	....
गुरूणाम्	....	....	....	....
साधवः	....	....	....	....
विद्यायाम्	....	....	....	....
फलानि	....	....	....	....
नदीषु	....	....	....	....
श्रियाम्	....	....	....	....
भ्रात्रे	....	....	....	....
पितुः	....	....	....	....
ज्ञानम्	....	....	....	....
वारिणी	....	....	....	....
आत्मानम्	....	....	....	....
सर्वस्याम्	....	....	....	....
वयम्	....	....	....	....
तस्य	....	....	....	....
अस्मिन्	....	....	....	....
तुभ्यम्	....	....	....	....

विसर्ग संधि :—

(i) विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और विसर्ग से परे ह्रस्व 'अ' ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म य र ल व ह आएँ तो विसर्गों को 'ओ' हो जाता है। यथा :—

रामः+अस्ति=रामोऽस्ति। रामः +जल्पति=रामो जल्पति।

रामः+वदति=रामो वदति। रामः +हन्ति=रामो हन्ति।

रामः+गच्छति=रामो गच्छति। मानुषः+अयम्=मानुषोऽयम्।

(ii) यदि विसर्ग से परे च या छ हो तो विसर्ग के स्थान में 'श्' और ट व ठ परे हो तो 'ष्' और त या थ हो तो 'स्' हो जाता है। यथा—

शूद्रः+छादयति=शूद्रश्छादयति। इतः +तावत्=इस्तस्तावत्।

निः+चिनोति=निश्चिनोति। रामः+टीकते=रामष्टीकते।

(iii) यदि विसर्गों से परे स्वर, या वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा अन्तस्थ वर्ण या 'ह्' परे हो और विसर्गों से पूर्व 'अ' 'आ' से अन्य कोई स्वर आ जाये तो उन विसर्गों के स्थान पर 'र्' हो जाता है। जैसे :—

भानुः+अयम्=भानुरयम्

भानुः+लसति=भानुर्लसति।

गौः+यति=गौर्याति।

वायुः+वहति=वायुर्वहति।

निः+भीति=निर्भीतिः।

अभ्यास

सन्धि-विच्छेद कीजिये (Dissolve the Sandhi) :—

पुनरपि	दुष्कृत्यम् ....
धनुष्टंकार:	नीरोग: ....
मुनिरागच्छति	हरिर्गच्छति ....
निर्णय:	दुर्नीति ....
हरिरेष:	हरेर्लास्यम् ....
रामोवदति	रामोजलपति ....
साधुर्गच्छति	हरिश्शेते ....

सन्धि कीजिये (Join the Sandhi) :—

कुत:+आगमनम्=	....	तयो:+एकम् =	....
सम्पूर्ण:+चन्द्र: =	....	वानर:+कुत्र=	....
शूद्र:+छादयति=	....	वायस:+तथा	....
नि:+भयम=	....	जन:+शेते=	....
महत:+उचितम्	....	अत:+शिशुम्	....
अन्त:+आत्मा=	....	प्रात:+एव=	....
राम:+याति=	....	भानो:+दीप्ति:=	....
कवे:+जय:=	....	अन्त:+जय:=	....
कृष्ण:+अस्ति=	....	सूत:+उवाच:=	....

अभ्यास

शिक्षक पर कुछ वाक्य लिखिये—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

उपपद-विभक्ति

शब्द	योग में होने वाली विभक्तियाँ	उदाहरण
नाम (अव्यय)	प्रथमा	वने भासुरको नाम सिंहोऽवसत् ।
उभयतः (दोनों ओर)	द्वितीया	नदीम् उभयतः वृक्षाः ।
धिक्	द्वितीया	धिक् चौरम् ।
गत्यर्थक धातु	द्वितीया, चतुर्थी	मनुष्यः ग्रामम् ग्रामाय वा गच्छति ।
प्रति (तरफ)	द्वितीया	ते ग्रामं प्रति उद्यताः सन्ति ।
सह, साकम्, सार्धम्	तृतीया	सीता रामेण सह (साकं, सार्धम्) वनम् आगच्छत् ।
क्रुध्	चतुर्थी	पिता पुत्राय क्रुध्यति ।
नमः	चतुर्थी	पित्रे नमः ।
अलम् (समर्थ)	चतुर्थी	रामः रावणाय अलम् ।

संख्याएँ संस्कृत में लिखिये (२५ से ५० तक)

पञ्चविंशतिः—२५	षड्विंशतिः—२६	सप्तविंशतिः—२७
अष्टाविंशतिः—२८	एकोनत्रिंशत्—२९	त्रिंशत्—३०
एकत्रिंशत्—३१	द्वात्रिंशत्—३२	त्रयस्त्रिंशत्—३३
चतुस्त्रिंशत्—३४	पञ्चत्रिंशत्—३५	षट्त्रिंशत्—३६
सप्तत्रिंशत्—३७	अष्टात्रिंशत्—३८	एकोनचत्वारिंशत्—३९
चत्वारिंशत्—४०	एकचत्वारिंशत्—४१	द्विचत्वारिंशत्—४२
त्रिचत्वारिंशत्—४३	चतुश्चत्वारिंशत्—४४	पञ्चचत्वारिंशत्—४५
षट्चत्वारिंशत्—४६	सप्तचत्वारिंशत्—४७	अष्टचत्वारिंशत्—४८
एकोनपञ्चाशत्—४९	पञ्चाशत्—५० ।	

योजकों का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिये :—

यत्र-तत्र—यत्र त्वम् वसीस् तत्र अहम् वसामि ।
यथा-तथा—यथा राजा तथा प्रजाः ।
यः-सः—यः विद्याम् पठति सः विद्वान् भवति ।
यदा-तदा—यदा व्याघ्रः पलायितः तदा द्वीपी समायातः ।
यावत्-तावत्—शृगालः यावत् गजमांसं भक्षयति तावत् अपरः शृगालः आगच्छत् ।

विशेष्य में जो विभक्ति, वचन और लिंग होता है वही विशेषण में होता है :—

सुन्दरः	बालकः	श्रेष्ठाः	छात्राः
पूज्या	माता	स्वस्थाः	बालिकाः
सुरम्यं	उद्यानम्	[illegible]धुराणि	फलानि
दीनाय	याचका[illegible]	[illegible]मलेन	शरीरेण
भक्तस्य	प्रह्ला[illegible]	[illegible]ने	वने
रूपवती	भार्या	[illegible]वं	पण्डितः

Sanskrit Mahavidyalaya 670

150533

6457/18-VII-Firos/D-86/P